UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 4 विभक्तीनां प्रयोगा (अनिवार्य संस्कृत)

प्रथमा
कुलं शीलं ..... विनश्यति॥

हिन्दी अनुवाद-कुल, शील, सत्य, बुद्धि, तेज, धैर्य, बल, गौरव, विश्वास, स्नेह (सब) दरिद्रता से नष्ट होता है।

प्रथम-द्वितीया
गुणो भूषयते ..... भूषयते धनम्॥

हिन्दी अनुवाद-गुण से रूप की शोभा होती है, शील से कुल की शोभा होती है, सिद्धि से विद्या की शोभा होती है (और) भोगों से धन की शोभा होती है।

प्रथमा-तृतीया
मृगाः मृगैः ..... सख्यम्

हिन्दी अनुवाद-कार्यों में समान गुण से मेल होता है। हिरन के बच्चे हिरनों के पीछे चलते हैं, गाय के गायों के पीछे, घोड़े के घोड़ों के पीछे, मूर्ख के मूर्खा के पीछे और विद्वान के विद्वानों के पीछे चलते हैं।

चतुर्थी-प्रथमा
दानाय लक्ष्मी ..... स एव॥

हिन्दी अनुवाद- जिसकी लक्ष्मी दान के लिए, जिसकी विद्या अच्छे कार्य के लिए, जिसकी चिन्ता परमब्रह्म के चिन्तन के लिए और जिसकी वाणी परोपकार के लिए होती है, वह तीनों लोकों में अलंकार स्वरूप वन्दनीय, श्रेष्ठ है।

पञ्चमी-प्रथम
विषादप्यमृतं ..... दुष्कुलादपि॥

हिन्दी अनुवाद-विष से अमृत ग्रहण कर लेना चाहिए। सोने को अपवित्र स्थान से भी ग्रहण कर लेना चाहिए, उत्तम विद्या नीच से भी ग्रहण कर लेनी चाहिए और बुरे कुल से भी स्त्री-रत्न (अच्छी स्त्री) ग्रहण कर लेना चाहिए।

षष्ठी-प्रथमा
हस्तस्ये भूषणं ..... प्रयोजनम्

हिन्दी अनुवाद-हाथ की शोभा दान से है, कण्ठ की शोभा सत्य (बोलने) से है, कान की शोभा शास्त्र (विद्या) से है। फिर आभूषणों से क्या प्रयोजन? अर्थात् कुछ नहीं है।

सप्तमी
उत्सवे व्यसने ..... बान्धवाः॥

हिन्दी अनुवाद-उत्सव में, व्यसन में (कार्य में), अकाल में, राष्ट्र पर विपत्ति में, राजा के दरबार में और श्मशान में जो साथ देता है, वही बन्धु है।

https://www.evidyarthi.in/